ग्रामीण महिलाओं में बढ़ा आत्मविश्वास

जेएसएलपीएस के जरिये ग्रामीण महिलाएं अपना जीवन स्तर सुधारने और बेहतर जीवन जीने का गुर सीख चुकी हैं. अब उनके अंदर आत्मविश्वास आ गया है. वो कठिन से कठिन परिस्थितियों से भी पार पा सकती हैं. सखी मंडलों से मिलनेवाला लोन उनके लिए वरदान साबित हो रहा है. उस पैसे से महिलाएं अपना व्यवसाय कर पहले से बेहतर जीवन-यापन कर रही हैं. सखी मंडल से जुड़ीं ग्रामीण महिलाएं सरकारी योजनाओं की वाहक भी बन रही हैं. इसके जरिये सरकारी योजनाएं अब गांवों के हर घर में पहुंच रही हैं. ग्रामसभा को मजबूत करके स्वराज अभियान के तहत गांवों के विकास में अपनी महती भूमिका निभा रही हैं. इतना ही नहीं, भाइयों से तोहफे के रूप में शौचालय का इस्तेमाल करने का वचन मांग रही हैं.

ग्रामीणों ने ग्राम स्वराज अभियान के बारे में जाना

ग्राम स्वराज अभियान की जानकारी लेते ग्रामीण.

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत मनोहरपुर प्रखंड के मकरंडा पंचायत भवन में ग्रामीणों को ग्राम स्वराज अभियान के महत्व और उसके लाभ के बारे में जानकारी दी गयी. इसके लिए पंचायत भवन में ग्रामीणों का दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित हुआ. केंद्र सरकार द्वारा शुरू किये गये ग्राम स्वराज अभियान के अंतर्गत मनोहरपुर प्रखंड के 19 गांवों का चयन किया गया है. इसके तहत उन गांवों का चयन किया गया है, जिसकी आबादी एक हजार से ज्यादा है. ग्राम स्वराज अभियान के तहत इन गांवों में सात योजनाओं को अच्छी तरह से लागू करके गांव और ग्रामीणों के विकास को गति देने का काम किया जायेगा. इस अभियान को सफल बनाने की जिम्मेदारी ग्रामसभा की होती है. मनोहरपुर प्रखंड के 19 गांवों में छोटनागरा, चिड़िया, लाइलोर, समठा, मांगजोड़ी, मकरकंडा, रोगों, राइडी, ईचापुर, डिपा, बडपोस, तुमसाई, नंदपुर, डिम्बुली, उरूकिया, बारंगा, कोलपोटका, बाइकेड़ा और तिरला मुख्य हैं. सात योजनाओं में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, सौभाग्य (प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना) उजाला योजना, प्रधानमंत्री जन-धन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और मिशन इंद्रधनुष पर विशेष जोर दिया गया. प्रशिक्षण के दौरान ग्रामीणों को पेसा कानून के बारे में भी जानकारी दी गयी. ग्रामीणों को बताया गया कि पेसा कानून पांचवीं अनुसूची वाले क्षेत्रों में आदिवासी शासन प्रणाली के तहत उसे प्रभावी ढंग से लागू करने की इजाजत देता है. देश के दस राज्यों में पेसा कानून लागू है. झारखंड के रांची, खूंटी, पश्चिमी और पूर्वी सिंहभूम समेत 14 जिलों में पेसा कानून लागू है. मिशन इंद्रधनुष के बारे में भी जानकारी दी गयी. मिशन इंद्रधनुष का उद्देश्य देश के उन सभी बच्चों का टीकाकरण कराना है, जो बच्चे किसी कारण छूट गये हों या फिर किन्हीं अन्य कारणों से उनका टीकाकरण नहीं किया गया है. इस योजना के तहत उन सभी बच्चों को वर्ष 2020 तक मुफ्त टीकाकरण उपलब्ध कराना है. इस टीकाकरण से बच्चे टीबी, पोलियो, हेपेटाइटिस-बी, निमोनिया जैसी 12 बीमारियों से बच सकते हैं. इसके साथ ही शिवकर पूर्ति ने ग्रामसभा आयोजित कर समिति गठन करने की जानकारी दी. मरकंडा पंचायत के सभी गांवों की सखी मंडल की महिलाओं और पुरुषों को ग्रामसभा को मजबूत करने का प्रशिक्षण दिया गया.

इमानती भेंगरा

प्रखंड : मनोहरपुर
जिला : पश्चिमी सिंहभूम

घरेलू कीटनाशक के प्रयोग से बढ़ी हरियाली

नयनतारा कुमारी

प्रखंड : लेस्लीगंज
जिला : पलामू

पलामू जिले के लेस्लीगंज प्रखंड अंतर्गत धनगांव के खेतों में अब जैविक कीटनाशक का प्रयोग होता है. धनगांव की संतोषी महिला मंडल की सदस्य संध्या देवी अपने खेतों में घर में बनाये हुए जैविक कीटनाशक का छिड़काव करती हैं, जिससे खेतों में हरियाली आ गयी है. संध्या अपने खेतों में गोबर से बनी खाद का उपयोग करती हैं, जिससे पैदावार भी अच्छी होती है और पर्यावरण को भी नुकसान नहीं पहुंचता है. वह बताती हैं कि पहले उन्हें इसकी जानकारी नहीं थी, इस कारण उन्हें खेती में नुकसान होता था और गांववाले भी खेती के प्रति ज्यादा जागरूक नहीं थे. जेएसएलपीएस के द्वारा जब गांवों में कृषि मित्र का चयन किया गया, तो संध्या देवी धनगांव से कृषि मित्र के लिए चुनी गयीं. कृषि मित्र का प्रशिक्षण मिला. प्रशिक्षण में फसलों में होनेवाली बीमारी व उसके रोकथाम के बारे में विस्तार से बताया गया, जो काफी लाभदायक रहा. कीटनाशक खुद से तैयार करने की विधि भी बतायी गयी. नीमास्त्र बनाने के लिए सिखाया गया. फसलों में नीमास्त्र का छिड़काव करने से फसल में कीट नहीं लगते हैं और पैदावार भी अच्छी होती है.

जीवन के लिए जरूरी है पेड़

कुमारी पूनमवाला

प्रखंड : मोरडीहा
जिला : गोड्डा

गोड्डा जिले के मोरडीहा प्रखंड में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के द्वारा वृक्षारोपण किया गया. इस दौरान श्रीफल और पपीता के पौधे लगाये गये. श्रीफल और पपीता में 250 प्रकार के विटामिन पाये जाते हैं. इसी प्रकार अन्य प्रकार के पौधे लगाकर हम पौष्टिक फल प्राप्त कर सकते हैं. जीवन जीने के लिए पानी और हवा की जरूरत पड़ती है और शुद्ध हवा हमें पेड़-पौधों से ही मिलती है. पेड़ लगाने से हमें स्वच्छ वातावरण मिलता है. पेड़ों से अन्य जीवों को भी जीवन मिलता है. चिड़िया पेड़ में घोंसला बनाती है. जागरूकता के अभाव में ग्रामीण पहले बेतहाशा पेड़ों की कटाई करते थे, जिसके बाद गांव में वन सुरक्षा समिति का गठन हुआ और वनों को बचाने का काम शुरू हुआ. समिति के द्वारा वनों की निगरानी अच्छी तरह होने लगी. वर्ष 2015 से वनों की रखवाली शुरू हुई, अब इसका असर दिखना शुरू हो गया है. लोगों को जागरूक करने के लिए गांव में हर वर्ष 14 अप्रैल को वन रक्षा बंधन मनाया जाता है. समूह की महिलाओं ने भी संकल्प लिया है कि वो हर साल एक पेड़ लगायेंगे.

बकरी पालन कर आगे बढ़ रहीं सुलोचना पूर्ति

अपनी बकरी के साथ खड़ी सुलोचना पूर्ति.

पश्चिमी सिंहभूम जिले के तांतनगर प्रखंड स्थित अंगरडीहा गांव की सुलोचना पूर्ति बकरी पालन करते हुए आत्मनिर्भर हो गयी हैं. सुलोचना के हालात ऐसे पहले नहीं थे. दिनभर मजदूरी करके महज 60 रुपये ही कमा पाती थीं. पति सिर्फ खेती-बारी का काम करते थे. इससे तीन बच्चों वाला परिवार चलाना काफी मुश्किल था. सुलोचना की हालत यह थी कि बच्चे की पढ़ाई के लिए एक कॉपी तक खरीदने के लिए उनको सोचना पड़ता था. इस बीच सुलोचना को सखी मंडल की जानकारी मिली और वो तुलसी महिला समूह से जुड़ीं और इस समूह की अध्यक्ष बन गयीं. तुलसी महिला समूह में 12 सदस्य हैं. हर रविवार को सुबह सात बजे समूह की बैठक होती है. सुलोचना पूर्ति की मेहनत और लगन को देखते हुए उन्हें ग्राम संगठन का कोषाध्यक्ष बनाया गया. समूह की गतिविधियों में सक्रिय रहते हुए सुलोचना ने समूह से 16,000 रुपये का लोन लिया. इस राशि से उन्होंने दो बकरियां खरीदीं. धीरे-धीरे बकरियों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई और आज उनके पास चार-पांच बकरियां हैं. बकरियों को बेच कर सुलोचना पैसे भी कमा रही हैं. सुलोचना कहती हैं कि पहले वो अपनी जरूरतों को पूरा करेंगी और फिर बकरी बेच कर समूह का लोन चुकाएंगी. आर्थिक स्थिति सुधरने के बाद सुलोचना ने अपने बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान देना शुरू किया. उनकी इच्छा है कि समूह से 15 हजार रुपये लोन लेकर बागवानी शुरू करें, ताकि आमदनी और बढ़ सके.

सुशीला देवी

प्रखंड : तांतनगर
जिला : पश्चिमी सिंहभूम

महिलाओं को मिली योजनाओं की जानकारी

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत हाटगम्हरिया प्रखंड के कुलाबुरू गांव के ग्राम संगठन कार्यालय में इसी-वन की बैठक आयोजित हुई. बैठक में जीवन ज्योति स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष सुशीला एवं नाले संगेन स्वयं सहायता समूह की राजश्री गगराई ने महिलाओं को सरकारी योजनाओं की जानकारी दी. पेयजल एवं स्वच्छता मिशन के बारे में बताया गया. तीन साल पहले तक यहां के ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं की जानकारी नहीं मिल पाती थी, लेकिन जेएसएलपीएस द्वारा संचालित महिला समूहों के द्वारा अब ग्रामीणों तक सीधे सरकारी योजनाओं की जानकारी मिल रही है. ग्रामीण उन योजनाओं का लाभ भी उठा रहे हैं. इस दौरान प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना जैसी सात सरकारी योजनाओं को जानकारी दी गयी. इसके साथ ही योजनाओं का लाभ किस तरीके से लिया जाये, इसकी भी जानकारी दी गयी. जोहार परियोजना के जॉब रिसोर्स पर्सन यशमति गगराई ने कहा कि जोहार परियोजना के शुरू होने से अब ग्रामीणों को काम करने के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा.

सुखमती गगराई

प्रखंड : हाटगम्हरिया
जिला : पश्चिमी सिंहभूम

भाइयों ने राखी के बदले दिया स्वच्छता का वचन

इस बार का रक्षा बंधन स्वच्छता बंधन के रूप में मनाया गया. इसके लिए पेयजल एवं स्वच्छता विभाग की ओर से सखी मंडल की महिलाओं को राखी दी गयी. अनगड़ा प्रखंड स्थित महेशपुर गांव में भी रक्षा बंधन धूमधाम से मनाया गया. महेशपुर आजीविका ग्राम संगठन-दो की अध्यक्ष सुषमा देवी ने कहा कि यह पर्व भाई-बहन के रिश्तों को और गहरा करता है. महेशपुर गांव में इस बार का रक्षा बंधन अलग तरीके से मनाया गया. पूरे टोले के सभी भाई-बहन एक जगह जमा हुए और एक साथ बैठ कर बहनों ने भाइयों को राखी बांधी. रिबन देवी बताती हैं कि रक्षा बंधन त्योहार का इंतजार हर भाई-बहन को रहता है. राखी बांधने के बदले भाई की ओर से बहन को तोहफा दिया जाता है. इस बार के रक्षा बंधन में उन्हें उनके भाई ने शौचालय के इस्तेमाल करने का वचन दिया है. रिबन देवी यह वचन पाकर काफी खुश हुईं. उन्होंने कहा कि स्वच्छता के प्रति सभी को जागरूक करने का यह नया रास्ता है. रक्षा बंधन के बहाने सखी मंडल की महिलाएं हर गांव में अपने भाइयों से यही उपहार लें, ताकि स्वच्छ भारत का सपना जल्द साकार हो सके.

रूबी खातून

प्रखंड : अनगड़ा
जिला : रांची

समूह से आत्मनिर्भर बना आयशा का परिवार

पलामू जिला अंतर्गत मेदिनीनगर प्रखंड के खनवा गांव की आयशा की आज खुद की पहचान है. आयशा अपने पति को रेडीमेड कपड़े की दुकान चलाने में सहयोग करती हैं. उनके जीवन में यह बदलाव ऐसे ही नहीं आया है. वह पहले घर से बाहर नहीं निकलती थीं, लेकिन आज घर और बाहर दोनों जगह बखूबी अपनी भूमिका निभा रही हैं. वर्ष 2015 में आयशा बानो आजीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं और बुककीपर बन गयीं. उनके बेहतर काम को देखते हुए उन्हें खनवा आजीविका ग्राम संगठन का मास्टर बुककीपर बना दिया गया. घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण आयशा ने समूह से 60 हजार रुपये का लोन लिया और पति के लिए एक रेडीमेड कपड़े की दुकान खोली. पांचमुहान चौक पर कपड़ा दुकान होने के कारण दुकान चल निकली और आयशा ने समूह से लिया लोन चुकता कर दिया. दुकान को और आगे बढ़ाने के लिए आयशा ने समूह से फिर 60 हजार रुपये का लोन लिया. दुकान बढ़ाने व अधिक सामान रखने के कारण अब आमदनी अधिक होने लगी. आयशा अब दूसरी महिलाओं को भी समूह से जुड़ने के लिए प्रेरित करती हैं.

ममता देवी

प्रखंड : मेदिनीनगर
जिला : पलामू

धान रोपने महिलाओं संग खेत में उतरे अधिकारी

गिरिडीह के डुमरी प्रखंड स्थित मध्यगोपाली गांव में जेएसएलपीएस के अधिकारी भी धान रोपाई करने खेत में उतर गये. अधिकारियों ने महिलाओं के साथ धान की रोपाई की. इस गांव में जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिसके तहत सीआरपी की टीम, बीपीएम सुनील राणा और एफटीसी विशेश्वर महतो मध्यगोपाली गांव पहुंचे और धान की रोपाई की. अधिकारियों को अपने साथ खेत में काम करते देख किसान काफी उत्साहित हुए. समूह की महिलाओं के साथ खेत में धान की रोपाई कर उन्हें प्रोत्साहित करते हुए अधिकारी भी खुश थे. जेएसएलपीएस के माध्यम से किसानों को तरह-तरह का प्रशिक्षण दिया जा रहा है. किसान भी प्रशिक्षण पाकर खुद से खाद बनाकर खेती कर रहे हैं. सीआरपी की टीम मध्यगोपाली, टेंगराखुर्द, असुरबांध, दूधपनिया और खाकी खुर्दा गांवों में खाद बनाने के कार्य में जुटी है. सखी मंडल से जुड़ी महिलाएं और अन्य पुरुषों को जैविक खाद बनाकर खेती करने की प्रक्रिया सिखायी जा रही है, ताकि किसान पहले से ज्यादा पैदावार कर सकें.

मुनिया देवी

प्रखंड : डुमरी
जिला : गिरिडीह